ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur – 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :

त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विट्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

12. मछुआरों की जिन्दगी की कथा-व्यथा को व्यक्त करता उपन्यास 'सागर, लहरें और मनुष्य'
• डॉ. शंकर तेरादाल 84

13. भारतीय मुस्लिम समाज की मानसिकता की पडताल करता उपन्यास 'अपवित्र आख्यान'
• डॉ. साहेबहुसैन जे. जहागीरदार 88

14. महानगरीय श्वेत-श्याम पक्ष को दर्शाता उपन्यास 'कबूतरखाना'
• डॉ. सदाशिव पवार 99

15. हिन्दी काव्य साहित्य में स्त्री-विमर्श : मंगलेश डबराल के संदर्भ में
• डॉ. श्रीमती विद्यावती जी. रजपूत 103

16. अनामिका के साहित्य में वृद्धास्था विमर्श
• डॉ. चंदन कुमारी 108

17. सुभाष शर्मा का 'भूख' कहानी संग्रह समकालीन समाज का आईना
• प्रो. एम. ए. पीराँ 114

18. हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श: आत्मकथाओं के संदर्भ में
• प्रो. असजद एम. सिद्दीकी 118

19. 'साहित्य में पर्यावरण विमर्श'
• डॉ. अमिता मानव 123

20. हिन्दी पत्रकारिता
• डॉ. सुजाता एन. मगदुम 127

21. हिंदी बाल साहित्य
• डॉ.एम.ए. लिंगसूर 132

22. हिंदी भाषा : स्थिति-गति
• डॉ. एच. एम. अत्तार 135

23. हिन्दी भाषा तथा मीडिया
• डॉ. बी. एम. राठोड 141

महानगरीय श्वेत-श्याम पक्ष को दर्शाता उपन्यास 'कबूतरखाना'

• डॉ. सदाशिव पवार

'कबूतरखाना' शैलेश मटियानी का दूसरा उपन्यास है जो सन् 1960 में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास का लेखन भी मटियानी जी ने श्रीकृष्ण पुरी हॉउस में ही किया था। यह उपन्यास भी मुंबई महानकर की आत्मिक पृष्ठभूमी से अनुप्राणित है। इस उपन्यास की कथाभूमि मुंबई के एक प्रसिद्ध मोहल्ला 'भुलेश्वर' को केंद्र में रखकर रचा गया है।

विवेच्य कृति में मुंबई के प्रसिद्ध मोहल्ले भुलेश्वर का विशद वर्णन किया गया है। यह मोहल्ला है, जहाँ अधिकतर सोने-चांदी, कपडे, बर्तन इत्यादि के व्यापारियों की दुकानें हैं। व्यापारिक दृष्टि से यह मोहल्ला काफी संपन्न माना जाता है। शैलेश मटियानी जी का प्रारंभिक जीवन इसी मोहल्ले में बीता था और बडे करीब से उनहोंने 'भुलेश्वर' की आंतरिक जिन्दगी को झाँककर देखा-परखा था जिसे उन्होंने 'कबूतरखाना' में हू-ब-हू दर्ज किया है। आज भी 'भुलेश्वर' में 'कबूतरखाना' आबाद है जहां पर बडी तादाद में कबूतर उड-उडकर आते है और दाना चुगते हैं। भुलेश्वर के धनी-मानी लोगों की तरफ से ऐसी व्यवस्था की गई है कि कबूतरों को दाना चुगाया जाता है। यही कारण है कि भुलेश्वर का यह महत्वपूर्ण मोहल्ला 'कबूतरखाना' के रूप में जाना जाता है। भुलेश्वर मोहल्ले में रहने वाले सेठों तथा उनकी पत्नियों की कथा उनके कबूतर नुमा नौकर गनपत रामा की जुबानी कहलवाई गई है। शराब के नशे में धुत गणतप जो कुछ कहता है, वह ऐसी तल्ख सच्चाई है जिससें इंकार नहीं किया जा सकता। गनपत

रामा शराब के सरूर में सेठों-सेठानियों की पोलपट्टी खोलता चला जाता है और उसका पोपट बीच-बीच में टकोरा लगाता जाता है।

महाराष्ट्र के 'सतारा' जिले का निवासी गणपत रामा गरीबी, जहालत, भुखमरी और विकट-विषम परिस्थितियों का मारा सबसे पहले अपनी अपबीती का वर्णन करता है कि किन मजबूरियों में उसे मुंबई आना पडा। उसकी बहन गंगा मुंबई के 'कमाठीपुरा' के तरेहवीं गली में कृष्णाबाई के यहाँ रहकर वेश्यावृति करती थी। गंगा हर महीने अपने भाई गणपत को कुछ-न-कुछ पैसे भेजती रहती थी। गणपत अपनी बहन से मिलने कमठीपुरा के 'बेगमविला' पहुंचता है लेकिन कमाठीपुरा की गलियों को देखकर उसे लगा-स्वर्ग होते-होते नरक के द्वार पर आ खडा हुआ है। जब गणपत गंगा का पता गोरखपुरी पानवाला भैया से पूछता है, तब वहाँ मौजूद कृष्णाबाई पूछती है.... कुटची गंगा बाई ? सातारा वाली काय' गणपत उसी सतारावली अपनी बहन के विषय में जानना चाहता था। गणपत 'बेगम विला' की पहली सीढी पर अपना पहला कदम रखा ही था कि गंगा जो विगत एक माह से गर्मी की बीमारी से तडप रही थी, अपने भाई का सामना कैसे करती ? गंगा ने अपने ही हाथों से फांस मारकर अपनी जीवन-लीला को समाप्त कर दिया। ततपश्चात गणपत एक पारसी सेठ के यहाँ होटल में काम करता। उसे खाने को तरमाल मिलता, लेकिन एक दिन सेठानी ने उससे संभोग की इच्छा जाहिर की। गणपत रामा सेठानी के इस बर्ताव से घबरा गया और वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गया। इसके बाद गणपत राम ने तेल-मलिश का काम किया, साथ-ही-साथ कुलसुम के लिए ग्राहक भी पटाने का काम करने लगा। कुलसुम के अलावा वह सईदन के लिए भी ग्राहक लाने लगा लेकिन सईदन को ऊपर का बुलावा जल्दी ही आ गया था। गणपत रामू दादा की कंपनी में दारू सप्लाई का काम करने लगा। दारू की बोतलें सप्लाई करने में उसे आमदनी अधिक होने लगी। एक दिन गणपत कमला नामक वेश्या के पास गया जो गर्मी की बीमारी से बेहाल थी। गणपत को अपनी गंगा समान पवित्र बहन 'गंगा' की याद आ गई। गणपत के अंदर का इंसान जाग उठा। उसने कमला को अपनी बहन मानकर उसका इलाज करवाया। कमला अच्छी हो गई और अपने घर चली गई।

गनपत रामा नशे की खुमारी में बार-बार हिचकियाँ लेता है और भुलेश्वर की सेठानियों के स्वच्छन्द प्रेम-प्रसंगों की कथा सुनानी शुरु करता है। सेठानी वसुंधरा बाई (देसाई सेठ की पत्नी) के यहाँ गनपत रामा काम करने लगा। उसी समय सेठ करसन भई के रामा पटवर्धन से गणपत की दोस्ती हो गई और पटवर्धन ने उसे जो कथा सुनाई, उसे गणपत रामा कहता है। पटवर्धन करमन भाई सेठ की पत्नी यशोदा बेन के साथ शारीरिक संपर्क स्थापित करने का प्रयास करता है तो वह उसे थप्पड मारती है। सेठ करसन भाई के संबंध शकुंतला बाई से हैं और वह दातुन बेचने वालियों से अपनी काम-वासना पूरी कर लेता है जबकि यशोदा बेन को घर की मुर्गी कहकर उपेक्षा करता है। पति द्वारा अपमानित यशोदा 'रामाओ' से अपनी दैहिक भूख मिटाने का काम करती है। एक दूसरी कथा में गणपत कहता है... कि पटवर्दन सेठ की पत्नी आनंदीबाई अपने रामा सखाराम से नाजायज संबंध के चलते एक बच्चे को जन्म देती है। लोगों को यह पटा चल गया था कि आनंदीबाई का बेटा पटवर्धन के रक्त से न होकर सखाराम से है। इस राज को खुलते ही सेठ पटवर्धन ने सखाराम का खात्मा करवा दिया। इसी कथा से जुडी हुई एक तीसरी कथा और है... पटेल सेठ की पत्नी शारदा सेठानी ने अपने रामा दन्तुभाऊ से मिलकर सेठ की हत्या करा देती है और आगे चलकर दन्तु भाऊ दत्तात्रय सेठ के नाम से शारदा सेठानी और पटेल की संपत्ति का स्वामी बन गया। इसके बाद गणपत रामा वसुंधराबाई से अपने अवैध काम-संबंधों के विषय में बताता है, सेठ लालजी अपनी धर्म-पत्नी के साथ कोई संबंध नहीं रखते हैं, प्रयुत नीलांबरी अपने काम पिपासा को लोगों के माध्यम से पूरा करने के लिए विवश है जिसकी परिणति यह होती है कि यौन रोग से पीडित हो जाती है तत्पश्चात दगडू रामा के यहाँ जाकर तीन बच्चों की माँ बनती है और वहीं उसका प्रणांत हो जाता है। रहमानी होटल में काम करनेवाला दगडू नीलांबरी के तीनों के तीनों बच्चों को यतीमखाने में ले जाकर दे देता है।

विवेच्य उपन्यास में मुंबई के सेठों के घरों काम करने वाले नौकर (रामा) की मर्मस्पर्शी कथा को गणपत के माध्यम से कहलवाया गया है। वास्तव में यह कथा किसी एक गणपत रामा की नहीं है, तथापि मुंबई महानगर के उन तमाम

रामाओं की पुरदर्द कहानी है। जिन्हें अपने दोजख को भरने के लिए अभिजात्य वर्ग के लोगों के घरों में ऐसे-ऐसे काम करने पडते हैं जिनके लिए उनकी आत्मा गवाही नहीं देती, लेकिन विवशता और लाचारी की मार से बेजार उन्हें वह सब करना पडता है, जिन्हें समाज 'अवैध' मानता है। सेठों की उपस्थिति या अनुपस्थिति में उनकी धर्मपत्नियों की काम-पिपासा को शांत करना उनकी नियति है। इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि 'कबूतरखाना' में चित्रित सेठों-सेठानियों तथा 'रामाओं' की नियति का मटियानी जी ने वर्णन किया है, एक तरह से समाज के ऊँचे तबके के लोगों के पुराणपंथी, दकियानूसी, का पोगापंथी और उसकी निस्तारता को खलरियाने तथा परत-दर-परत को उधाडकर वास्तविकता से साक्षात्कार कराया है लेकिन जहाँ तक मेरा अपना मानना है, ऐसा लगता है कि मटियानी जी का दृष्टिकोण एकांगी रहा है। उन्होंने सिर्फ एक ही पक्ष को लिया है। भुलेश्वर मोहल्ले के संपन्न एवं धनाढ्य वर्ग ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में जो अपना उचित यरेगदान दिया है, उसका जिक्र उपन्यास में नहीं आया है। माना नारी-परुष के बीच यौन-संबंध बहुत महत्वपूर्ण हैं और जब कोई नारी या पुरुष अतृप्त काम-वसना का शिकार होता है तब उसमें इस प्रकार के विकारों का जन्म लेना लाजिमी हो जाता है लेकिन क्या मटियानी जी का मकसद सिर्फ जीभ और जांघ के बीच के भूगोल ही अपने को सिमित रखना था ? क्या मटियानी जी की दृष्टि सेठों द्वारा दो नंबर के धन, कालाबाजारी, स्मगलिंग या अन्य अनेक प्रकार के अतिरंजत कार्यों पर नहीं गई ? जो धन-बल पर सब कुछ अर्जित करने सक्षम हो जो हैं। चेतना प्रवाही शैली में लिखा गया यह उपन्यास उस वर्ग की कलई खोलने में कारगर साबित हुआ है जो अपने आपको सफेदपोश कहलाने का मिथ्या दंभ भरते हैं।

■■

हिंदी विभाग, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर